प्राचीन भारत एवं इसके इतिहास के स्रोत

प्राचीन भारत के इतिहास को समझने और जानने के लिए हमारे पास विभिन्न प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं। इन स्रोतों के आधार पर ही इतिहासकारों ने प्राचीन भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन किया है। इन सभी स्रोतों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में बांटा गया है: पहला साहित्यिक स्रोत, दूसरा पुरातात्विक स्रोत, और तीसरा विदेशी यात्रियों के विवरण।

1. साहित्यिक स्रोत

साहित्यिक स्रोत वे स्रोत हैं जो लिखित रूप में पाए जाते हैं। प्राचीन भारत का अधिकांश साहित्य धार्मिक है क्योंकि उस समय धर्म का व्यापक प्रभाव था। अध्ययन की सुविधा के लिए इन साहित्यिक ग्रंथों को मुख्य रूप से ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन ग्रंथों में विभाजित किया गया है, जिनमें ब्राह्मण धार्मिक ग्रंथ सबसे प्रमुख हैं। इन्हें आगे धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य के रूप में भी समझा जा सकता है।

धार्मिक साहित्य: इसके अंतर्गत वेद, पुराण, महाकाव्य जैसे रामायण और महाभारत, तथा बौद्ध और जैन ग्रंथ शामिल हैं। इन ग्रंथों से उस समय के समाज, राजाओं की शासन प्रणाली और धार्मिक मान्यताओं की विस्तार से जानकारी मिलती है। ब्राह्मण धार्मिक ग्रंथों के अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख श्रेणियां हैं:

- **वेद:** ब्राह्मण धार्मिक ग्रंथों में वेदों का प्रथम स्थान है। वेद विश्व साहित्य के प्राचीनतम ग्रंथ के रूप में गिने जाते हैं। 'वेद' शब्द का अर्थ 'ज्ञान' है। प्राचीन भारतीय ऋषियों का ज्ञान वेदों में समाहित है। वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
- **ऋग्वेद:** यह सबसे प्राचीन वेद है और इसका रचना काल 1500-1000 ईसा पूर्व माना जाता है।

- **ऐतिहासिक महत्व:** यद्यपि वेद धार्मिक ग्रंथ हैं, फिर भी इनमें तत्कालीन आर्यों के समूहों के प्रसार, संघर्ष, राजनीतिक तथा सामाजिक संगठन, आर्थिक जीवन और धार्मिक आस्थाओं के पर्याप्त उल्लेख प्राप्त होते हैं।

- **ब्राह्मण ग्रंथ:** इन ग्रंथों में आर्यों की यज्ञ क्रिया का विशद वर्णन किया गया है। 'ब्रह्म' शब्द का अर्थ है 'यज्ञ'। अतः यज्ञ सम्बन्धी इस साहित्य को ब्रह्म साहित्य या 'ब्राह्मण' कहा गया। ये ग्रंथ गद्य में हैं। एतरेय, वाजस्नेय, पंचविंश और गोपथ मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ हैं। यद्यपि ब्राह्मण ग्रंथों का सम्बन्ध यज्ञों के कर्मकाण्डों से है फिर भी इनमें तत्कालीन समाज तथा धार्मिक विचारों की महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त होती है।

- **आरण्यक:** 'आरण्य' शब्द का अर्थ वन है। चूँकि इन ग्रंथों का अध्ययन वनों में किया जाता था, यही कारण रहा कि इन्हें 'आरण्यक' कहा गया। इन ग्रंथों में यज्ञवाद के स्थान पर चिंतनशील ज्ञान की स्थापना की गई। संख्या की दृष्टि से आरण्यक सात हैं- एतरेय, शांखायन, तत्तिरीय, मैत्रायणी, याध्यन्दिन, बृहदारण्यक और तलवकार।

- **उपनिषद:** 'उपनिषद' शब्द का अर्थ 'समीप बैठना' है। इन ग्रंथों में दर्शन और अध्यात्म का गम्भीर चिंतन है। इनका मुख्य विषय 'ज्ञान की जिज्ञासा' और 'परमब्रह्म' की स्थापना है। उपनिषदों को 'ब्रह्मविद्या' भी कहा जाता है। उपनिषदों में ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तत्तिरीय, श्वेताश्वतर, छान्दोग्य, बृहदारण्यक एवं कौषीतकी उपनिषद सर्वप्रमुख हैं।

- **सूत्र साहित्य:** सूत्र साहित्य के तीन भाग हैं- कल्प-सूत्र, गृह्य-सूत्र और धर्म-सूत्र।

- **कल्प-सूत्र:** इसमें यज्ञों का विधि-नियम प्रतिपादित किया गया है। कल्प सूत्रों के अन्तर्गत 'श्रोत-सूत्र' हैं। 'श्रोत' का अर्थ 'यज्ञ' है। इन्हीं श्रोत सूत्रों के अन्तर्गत 'शुल्व सूत्र' हैं जिनमें वेदी के निर्माण की व्याख्या की गई है।

- **गृह्य-सूत्र:** इसमें मनुष्य के लौकिक और पारलौकिक कर्तव्यों का वर्णन है।

- **धर्म-सूत्र:** इसमें मनुष्य के विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकारों और कर्तव्यों का वर्णन है।
- **वेदांग:** वेदांग प्राचीन इतिहास के स्रोत हैं। इनकी संख्या छः है और ये वेदों से सम्बन्धित हैं। यही कारण है कि इन्हें वेदों का अंग या वेदांग कहा गया।
- **अंग:** इनके अन्तर्गत शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष आते हैं। इनकी सहायता से वेदों को बड़ी सरलता के साथ समझा जा सकता है।
- **व्याकरण:** पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' व्याकरण ग्रंथ है। इसमें 18 अध्याय और 3,863 सूत्र हैं। कात्यायन ने वार्तिक बनाये तथा पतंजलि ने 'महाभाष्य' की रचना की। निरुक्त के रचनाकार यास्क हैं (12 अध्याय)। छंदशास्त्र के रचयिता आचार्य पिंगल हैं। ज्योतिष के क्षेत्र में आर्यभट्ट, लल, वराहमिहर, ब्रह्मगुप्त, मुंजाल, भास्करचार्य प्रमुख हैं।
- **स्मृति साहित्य (धर्मशास्त्र):** ब्राह्मण धर्म ग्रंथों में 'धर्मशास्त्रों' का, जिन्हें स्मृतियों के नाम से भी जाना जाता है, विशेष स्थान है। इनसे हिन्दू समाज के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। उनके जीवन यापन और आर्थिक गतिविधियों को जानने में ये ग्रंथ महत्वपूर्ण हैं।
- **प्रमुख स्मृतियाँ:** इनकी रचना सूत्र साहित्य के बाद हुई। प्रारम्भिक स्मृतियों में मनुस्मृति और याज्ञवल्क्यस्मृति सर्वप्रमुख हैं। इनका रचनाकाल ईसा पूर्व 200 से 200 ई. के बीच है। नारद, वृहस्पति और विष्णु की स्मृतियाँ भी महत्वपूर्ण हैं।
- **महाकाव्य:** वैदिक साहित्य के बाद महाकाव्यों का मुख्य स्थान है। महाकाव्यों के अन्तर्गत 'रामायण' और 'महाभारत' आते हैं।
- **विवरण:** ये महाकाव्य ऐतिहासिक घटनाओं के स्थूल रूप हैं। रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि तथा महाभारत की रचना वेदव्यास द्वारा की गई थी। इनसे तत्कालीन समाज की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का ज्ञान होता है।

- **पुराण:** 'पुराण' का अर्थ 'प्राचीन' है। इसके अन्तर्गत धर्म, इतिहास, आख्यान आदि समस्त साहित्य आता है। इनकी रचना महाकाव्यों की समकालीन प्रतीत होती है। पुराणों में आदि काल से गुप्त काल तक की ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है। पुराण 18 हैं लेकिन इतिहास की दृष्टि से मत्स्य, वायु, विष्णु, ब्रह्माण्ड, भागवत, भविष्य और अग्नि ही महत्वपूर्ण हैं।

लौकिक साहित्य: इसके अंतर्गत ऐसे ग्रंथ आते हैं जो किसी विशेष धर्म से जुड़े नहीं हैं, जैसे कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कालिदास के नाटक, और बाणभट्ट की हर्षचरित। इन रचनाओं से राजनीति, शासन और उस काल की आम जनता के जीवन की स्पष्ट जानकारी मिलती है।

2. पुरातात्विक स्रोत

पुरातात्विक स्रोत वे स्रोत होते हैं जो जमीन की खुदाई और पुरानी भौतिक वस्तुओं के अध्ययन से प्राप्त होते हैं। यह स्रोत पूरी तरह से विश्वसनीय माने जाते हैं क्योंकि इनमें बदलाव संभव नहीं होता। इसमें मुख्य रूप से अभिलेख, मुद्राएं और स्मारक शामिल हैं:

- **अभिलेख:** अभिलेख पत्थरों, धातुओं या मिट्टी के बर्तनों पर उत्कीर्ण मिलते हैं। सम्राट अशोक के शिलालेख इसका सबसे उत्तम उदाहरण हैं, जिनसे उनके शासन काल और नीतियों का पता चलता है।
- **मुद्राएं (सिक्के):** प्राचीन काल के सिक्के सोने, चांदी, तांबे और कांसा के होते थे। इन सिक्कों से राजाओं के समय, उनके साम्राज्य की आर्थिक स्थिति और व्यापारिक संबंधों की जानकारी मिलती है।
- **स्मारक और भवन:** पुराने मंदिर, स्तूप, विहार और नगरों के अवशेष उस काल की कला, स्थापत्य और सामाजिक उन्नति को दर्शाते हैं।

3. विदेशी यात्रियों के विवरण

प्राचीन काल में कई विदेशी यात्री, व्यापारी और राजदूत भारत आए थे। उन्होंने यहां रहकर जो देखा, उसे अपने ग्रंथों और यात्रा वृत्तांतों में दर्ज किया। इन्हें मुख्य रूप से यूनानी, चीनी और अरबी यात्रियों में बांटा जा सकता है।

मेगस्थनीज की पुस्तक इंडिका, फाह्यान और ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांत, और अल-बरूनी का विवरण इसका प्रमुख उदाहरण है। इन विदेशी लेखकों के विवरण से हमें यह पता चलता है कि बाहर के लोग प्राचीन भारत को किस रूप में देखते थे और यहां की सामाजिक व्यवस्था कैसी थी।

इस प्रकार, साहित्यिक स्रोत, पुरातात्विक स्रोत और विदेशी यात्रियों के विवरण-ये तीनों मिलकर प्राचीन भारत के इतिहास को समझने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं।